टमाटर

भूमिः– टमाटर प्रायः सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जाता है, लेकिन अच्छी पैदावार के लिए जैविक पदार्थो से भरपूर दोमट या बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। यदि मिट्टी अधिक अम्लीय है तो चूने का व्यवहार करना चाहिए।

उन्नत किस्में:– पूसा रूबी, पूसा अर्ली ड्वार्फ, अर्का आलोक, स्वर्ण लालिमा, मुरझा (बिल्ट) प्रतिरोधी किस्म, अर्का आभा एवं अर्का आलोक हैं। स्वर्ण वैभव, स्वर्ण नवीन, पूसा हायब्रीड-2, काशी अमृत, स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण समृद्धि, स्वर्ण विजया, अर्का रक्षक, अर्का सम्राट इत्यादि।

बीज दरः–

अधिक उपजशील प्रजातियाँ (200–240 ग्राम प्रति एकड़)

संकर प्रजातियाँ - 60-80 ग्राम प्रति एकड़।

लगाने की समय : टमाटर के बीज को पौधशाला में छोटी छोटी क्यारियों में बोकर बिचड़ा तैयार करते हैं तथा जब बिचड़े 4–5 सप्ताह के हो जाते हैं तो उन्हें पहले से तैयार तथा खाद दिए गए खेतों में रोपते हैं। पौधशाला में बीज गिराने का समय अगस्त से नवम्बर है।

पौधा रोपने की दूरीः– कतार से कतार : 60-75 सें0मी0
पौधा से पौधा : 45 सें0मी0

खाद की मात्रा (प्रति एकड़)
1. गोबर की सड़ी खाद – 80–100 क्विंटल
2. यूरिया – 80 किलो
3. सिंगल सुपर फास्फेट – 120–160 किलो
4. म्यूरियेट ऑफ पोटाश – 40 किलो

गोबर खाद, सिंगल सुपर फास्फेट, म्यूरियेट ऑफ पोटाश की पूरी मात्रा तथा यूरिया की आधी मात्रा खेत की तैयारी के समय ही दे देते हैं। यूरिया की बाकी आधी मात्रा टॉप ड्रेसिंग के रुप में निकाई–गुड़ाई तथा मिट्टी चढ़ाते समय देनी चाहिए।

सिंचाईं (Irrigation) : टमाटर एक बहुत ही सतर्क रूप से सिंचाई चाहने वाली फसल है। इसकी उचित समय पर सिंचाई करना बहुत ही आवश्यक है। इसमें अधिक सिंचाईं तथा कम सिंचाई दोनों ही हानिकारक हैं। इसके लिये यह आवश्यक है कि भूमि मसामान्य नमी (Moderate Moisture) सदैव होनी चाहिये। इस प्रकार टमाटर की स्टेक फसल (Stake Crops) एवं गर्मी की फसल में सिंचाई 7 दिन के अन्तर पर आवश्यकतानुसार करनी चाहिये तथा जमीन की फसल (Ground Crops) एवं जाड़े की फसल के लिये सिंचाई 10 दिन के अन्तर पर आवश्यकतानुसार करनी चाहिये। सूखे की स्थिति के तुरन्त बाद अधिक पानी से फल फट जाते हैं।

अन्तः क्रियायें (Intercultue)– टमाटर जल्दी-जल्दी एवं उथली निकाई-गुड़ाई चाहने वाली फसल है। अतः प्रत्येक सिंचाई के बाद 'हैंड हो' के द्वारा भूमि की ऊपरी सतह को भुरभुरी रखना चाहिये। गहरी निकाई-गुड़ाई करने से जड़ों को हानि पहुँचाती है। इस प्रकार भूमि में अच्छी प्रकार से वायु संचार बनाये रखने के लिये पहली गुड़ाई रोपाई के 20-25 दिन बाद तथा दूसरी 40-45 दिन बाद गुड़ाई करके जड़ पर मिट्टी चढ़ा देनी चाहिए।

कटाई, छटाई, और स्टेकिंग (Pruning, Training and Staking) : बाजार में टमाटर को शीघ्र उपलब्ध कराने के लिये पौधों की कटाई करके एक तने (Single Stem) के रूप में करके स्टेक से बाँध देते हैं। इसको सहारा देना (Staking) भी कहते हैं। इससे पौधा अधिक बढ़ता है तथा टमाटर बड़ा तथा अधिक पैदावार मिलती है। कटाई-छटाई

के बहुत से तरीके हैं, परन्तु मूख्य रूप से एक तने के रूप में (Single stem training) ही करते हैं। कटाई तथा स्टेकिंग का खर्च अधिक होने के कारण सभी उत्पादनकर्त्ता इसको अपना नहीं पाते।

उपज : 150–300 क्विंटल प्रति एकड़।

पौध संरक्षण : कीट

1) फलबेधक या शीर्ष छेदक : इसके पिल्लू फल में या शीर्ष पर पत्ती के जुड़े होने के स्थान पर छेद बनाकर घुस जाते हैं और उसे खाते हैं। प्रभावित फल खाने लायक नहीं रहते।

रोकथाम : थियोडाइकार्ब 75% डब्लू.पी. 1 ग्रा./ली. या फ्लूबेन्डियमाइड 480 एस.सी. 0.25 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

2) लीफ माइनर : ये कीट बहुत छोटे होते हैं जो पत्तियों के ऊपरी सतह में टेढ़ी-मेढ़ी सुरंग बनाकर उतकों को खाते रहते हैं।

रोकथाम : थायोमेथोजाम 25% डब्लू.जी. 1 ग्राम प्रति 3 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल में छिड़काव करें।

3) लीफ हॉपर (पत्ती फुदका) : इसके शिशु एवं वयस्क पत्तियों पर चिपककर रस चुसते हैं। अधिकता की अवस्था में पत्तियों पर छोटे-छोटे धब्बे दिखाई देते हैं।

रोकथाम : बुप्रोफेन्जिन 5% 1 मि.ली. 15 दिनों के अंतर पर दो बार 1 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कें।

रोग एवं रोकथाम

1) आर्द्रगलन : पौधशाला में बिचड़ों का मरना, मिट्टी की सतह से कुछ ऊपर तक जलस्किट सड़न।

रोकथाम : बीजोपचार तथा पौधशाला में क्यारियों की ब्लूकॉपर दवा की 2 से 3 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

2) अगेती झुलसा : आरंभ में पत्तियों तथा तनों पर काले भूरे रंग के धब्बा बनना। उग्रता की स्थिति में धब्बों का एक दूसरे से मिलकर फैलना तथा पत्तियों का पीला पड़कर गिरना, फलों का ग्रसित होना।

3) पछेती झुलसा : पहले पत्तियाँ तथा तनों पर भूरे बैंगनी धब्बे दिखाई पड़ते हैं यदि रोकथाम में देर हो जाए तो यह कंद तक पहुँच जाता है और सड़न पैदा कर देता है।

रोकथाम : दोनों प्रकार के झुलसा के रोकथाम के लिए टेबुकानेजोल (25%) 1 मि.ली. दवा का प्रति लीटर पानी घोल बनाकर बोने के 40 दिन बाद से 15 दिन के अंतराल पर 2 छिड़काव करना चाहिए या इप्रोवेलीकार्ब 5.5%+प्रोपीनेब 61.25% डब्लू.पी. का 2-2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

4) फल विगलन : कच्चे फलों का जलसिक्त धब्बे तथा पीलापन अथवा मटमैलापन लिए धब्बों से सड़न प्रारंभ होना।

रोकथाम : पौधों को खूंटी के सहारे उगाना, जल निकासी का समुचित प्रबंध तथा 5-7 दिन के अंतर पर प्रोपीनेब 70% डब्लू.पी. के 2.5 से 3 ग्राम के घोल को प्रति लीटर पानी में में मिलाकर छिड़कें।

5) बैक्टीरिया मुरझान : पौधे का किसी भी अवस्था में अचानक सूख जाना।

रोकथाम : रोग प्रतिरोधी किस्में जैसे - स्वर्ण समृद्धि, स्वर्णनवीन, स्वर्ण सम्पदा, स्वण विजया, स्वर्ण लालिमा, अर्का आभा अर्का रक्षक और सम्राट को खेती के लिए उपयोग में लाना।